सप्रसंग व्याख्या

1. *आकाश का साफ़ा बाँधकर*
सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़,
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी,
पास ही दहक रही है
पलाश के जंगल की अँगीठी
अँधकार दूर पूर्व में
सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले-सा। *(पृष्ठ संख्या-63)*

शब्दार्थ–***साफ़ा***–पगड़ी। ***चिलम***–जिसमें तंबाकू रखकर आग भरी जाती है। ***दहकना***–सुलगना, जलना। ***पलाश***–लाल रंग का एक फूल। ***अँगीठी***–जिसमें आग जलाई जाती है। ***पूर्व***–पूरब। ***सिमटा***–इकट्ठा। ***गल्ले***–समूह, झुण्ड।

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग–2' में संकलित कविता 'शाम–एक किसान' नामक कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं। इन पंक्तियों में जाड़े के शाम की प्राकृतिक दृश्य का चित्रण है।

व्याख्या–पहाड़ किसी किसान के रूप में घुटने मोड़े हुए निश्चिंतता से बैठा है और सामने रखे सूरज को चिलम की तरह पी रहा है। किसान रूपी पहाड़ के सिर पर साफ़े की जगह आकाश बंधा हुआ है। उसके घुटनों पर बह रही नदी देखकर ऐसा लगता है मानों सफेद चादर घुटने पर पड़ी हुई हो। समीप स्थित जंगल में पलाश के लाल-लाल फूल दहक रही अँगीठी के समान प्रतीत हो रहे हैं। दूर पूरब दिशा में अँधेरा धीरे-धीरे बढ़ते हुए भेड़ों के समूह जैसा दिखाई दे रहा है।

2. *अचानक–बोला मोर।*
जैसे किसी ने आवाज़ दी–
'सुनते हो'।
चिलम औंधी
धुआँ उठा–
सूरज डूबा
अँधेरा छा गया। *(पृष्ठ संख्या-63)*

शब्दार्थ–***अचानक***–एकाएक। ***औंधी***–उलट पड़ी। ***डूबा***–अस्त हुआ।

प्रसंग–उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'वसंत भाग-2' में संकलित कविता 'शाम–एक किसान' नामक कविता से उद्धृत हैं। इसके रचयिता सर्वेश्वर दयाल सक्सेना हैं। इन पंक्तियों में सूर्यास्त के प्राकृतिक दृश्य का काल्पनिक वर्णन है।

व्याख्या–अचानक मोर के बोलने की आवाज से लगता है, जैसे किसी ने पुकारा 'सुनते हो'। संभवतः इस आवाज से शाम जो एक किसान के रूप में चित्रित है हड़बड़ाकर उठता है, जिससे चिलम उलट जाती है और धुआँ उठने लगता है अर्थात् चिलम के रूप में सूर्य अस्त हो जाता है और धुएँ के रूप में अंधकार चारों दिशाओं में व्याप्त हो जाता है। इस प्रकार सूर्यास्त के साथ ही शाम रात में बदल जाती है।